रविवार, दिनाँक 13-08-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सब सजनों को जय सीता राम जी।

सजनों समयकाल को दृष्टिगत रखते हुए सब ऐसे बनो कि अपने यथार्थ को जानने के साथ-साथ परिवारजनों व कुल समाज को जीवन की यथार्थता से परिचित कराने में सक्षम हो जाओ। आशय यह है कि आप स्वयं तो आत्मयथार्थ को जानो ही, साथ ही अन्यों को भी जनाओ कि यह जीवन क्या है और इस जीवन का वास्तविक प्रयोजन/कर्त्तव्य क्या है? जानो अपने जीवन का यह कर्त्तव्य सन्तोष और धैर्य में बने रहते हुए निर्विकारिता से निभाना आवश्यक है। अब जहाँ निर्विकारिता होती है वहाँ मान-अपमान नहीं होता। वहाँ सेवा में रत इन्सान छोटी-छोटी बातों को लेकर कल्पता नहीं और न ही अन्यों के मन में कल्पना पैदा करता है। वैसे भी छोटी-छोटी बातों को लेकर खुद कल्पना और अन्यों के अन्दर कल्पना पैदा करना अनुशासनहीनता की बात होती है। ऐसे में यह स्थिति और भी ख़तरनाक हो जाती है जब घर का मुखिया ही यह अनुशासनहीनता उत्पन्न करता है। ऐसा मुखिया फिर वह न तो स्वयं को और न ही अपने परिवार/ऑफिस वालों को अनुशासित ढँग से चलाते हुए अपने कर्त्तव्यों के प्रति सेवा भाव से समर्पित रख सकता है। आप ही बताओ कि फिर वह कैसे सबसे आदर प्राप्त कर उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हो सकता है? इसी कारण परिवारजनों के साथ दिलों में दूरियाँ बढ़ती हैं और यह दूरियाँ निन्दा-चुगली का रूप लेकर वैर-विरोध की स्थिति में चली जाती हैं। यह सन्देश जब समाज में जाता है तो ऐसा व्यक्ति फिर अपनी कमज़ोरी के कारण बदनामी का कारण बनता है। इसके विपरीत जो कोई भी इन्सान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपनी कमज़ोरी का एहसास कर पुनः आत्म-नियन्त्रण द्वारा आत्म-सुधार करने का पुरुषार्थ दिखाता है, वह गिरता हुआ इन्सान भी पुनः सम्भलकर अपने यथार्थ स्वरूप में आ जाता है और अपनी सेवा के निमित्त

तन-मन-धन वारने से नहीं सकुचाता। ऐसे इन्सान को फिर मान-अपमान नहीं खलता क्योंकि वह सेवा करते-करते सम अवस्था में आ जाता है।

इसके विपरीत जो मान-अपमान में फँसकर किसी की छोटी सी बात से भी उत्तेजित हो जाता है, उसे परिवार के सदस्य बात-बात पर तोड़ते हैं क्योंकि उन्हें उसकी कमज़ोरी समझ आ जाती है। ऐसा इन्सान फिर पल में पराधीन हो बौखलाकर अपना आपा खो बैठता है और अन्य उसकी कमज़ोरी का फायदा उठा स्वतन्त्र रूप से जो करना चाहते हैं, वह करते हैं। यह अपने आप में जीवन प्रणाली के सारे कायदे-कानून तोड़ जीवन हारने की बात होती है। ऐसा इन्सान फिर अपने जीवन के कर्त्तव्य यानि सेवा भाव की तरफ से पराजित हो अपयश का भागी बनता है। कलुकाल में सजनों इसी प्रकार हारने और हराने का खेल चलता है।

इस सत्य को सजनों सबने समझना है ताकि हम इस खेल में बिना उलझे अपना मानसिक सन्तुलन हर परिस्थिति में सम रख सकें और किसी कारणवश भी बौखलाकर सेवा त्यागने पर तत्पर न हो जाएँ। जानो यह बुज़दिली है और मानसिक कमज़ोरी की निशानी है। यह मान कर चलो कि सेवा में ऐसा वातावरण तो मिलता ही मिलता है। जानो ऐसा करने पर ही सफलता को प्राप्त हो सकते हो वर्ना तो आप असफलता की ओर बढ़ते हुए असहनीय नुक्सान का कारण बन जाते हो। कहने का आशय सजनों यह है कि अपने आप को सम्भालो। अब सेवारत इन्सानों को तोड़ने के लिए जो तत्पर हैं उन पर हम नज़ररखेंगे और देखेंगे कि वे टूटते हैं या नहीं? अब उन इन्सानों की परख होगी। अगर तो वे कर्त्तव्यपरायणता से अपनी ड्यूटी पर स्थिर रहे तो हम समझेंगे कि वे काबिल इन्सान हैं और यदि वे मान-अपमान में आकर टूट गये तो हम समझेंगे कि वे नाकाबिल हैं और कदापि सफलता का प्रतीक नहीं बन सकते। यहाँ याद रखो कि सेवारत रहते हुए जो अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता या फिर अपने जीवन लक्ष्य के प्रति सतर्क नहीं रह सकता, वह किसी तरह से भी काम का इन्सान नहीं हो सकता।

ऐसे में वह चाहे कितना ही ज्ञानी क्यों न हो तब भी वह छोड़ने योग्य होता है। इस सन्देश को हर सेवारत सजन ने समझना है और फिर सम्भलकर मान-अपमान से ऊपर उठ जाना है। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से भजन सुनोः-

अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।

हुण अन्दर बादल कोई नहीं, समझाया महाबीर जी प्यारे ने।।

असां सुत्तियां भुलियाँ दासियां नूं, हुण जगाया महाबीर जी प्यारे ने।

दासियां जन्म जन्म दियां बिछड़ियां नू, रघुनाथ मिलाया महाबीर जी प्यारे ने।।

काम क्रोध लोभ अन्दर कोई नहीं, यह बताया महाबीर जी प्यारे ने।

वैर विरोध हैन बाहर भैणों, झगड़ा मुकाया महाबीर जी प्यारे ने।।

शब्द सुरति दा सी विछोड़ा भैणों, मेल कराया महाबीर जी प्यारे ने।

संसार समुंद्र दे विच भरम रहे, किनारे लाया महाबीर जी प्यारे ने।।

मौत दा दिन रात सी भय नी भैणों, हुण बचाया महाबीर जी प्यारे ने।।

असां भुलियां होईयां दासियां नूं, राह बताया महाबीर जी प्यारे ने।।

रघुनाथ जी दे चरणां दे विच भैणों, हुण बिठाया महाबीर जी प्यारे ने।।

धूप दीप और तिलक भैणां, रघुनाथ जी नूं लवाया महाबीर जी प्यारे ने।।

दासी सदके ते कुरबान जावे, अचरज खेल दिखाया महाबीर जी प्यारे ने।।

अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।।

इस भजन के सन्दर्भ में हम सबसे पूछते हैं कि क्या सच्चेपतशाह जी की तरह हम में, आप में और सब में सार्वजनिक रूप से अपनी स्वाभविक कमज़ोरियों को स्वीकारने की हिम्मत है? क्या हिम्मत है अपने गुणों को समझने की जगह अपने अवगुणों को स्वीकारने की? बताओ सजनों कि जिन सजनों ने भी पालना की कमज़ोरी के कारण विकारवृत्तियों को अपनाकर अपना रूप दानवता वाला बना अहंकार प्रवृति अपना ली है क्या वे सबके सामने अपने अवगुणों का बखान करने की हिम्मत रखते हैं? यहाँ जान लो कि जब तक आप अपनी बीमारी को बताओगे नहीं तब तक आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्तकर अपना मन शान्त नहीं कर पाओगे। ऐसा इसलिए कि तब आप हर वजह या कारण को, नकारात्मकता से लेकर सर्वत्र क्लेशपूर्ण वातावरण बनाओगे ही बनाओगे। इस तरह आप खुद तो टूटोगे ही टूटोगे साथ ही अन्यों को भी तोड़ बैठोगे। यही नहीं तब आप स्वयं ही अपने परिवार के वातावरण को सुन्दर बनाने के स्थान पर नकारात्मक बना बैठोगे। जानो सजनों यह अज्ञान है जो हमे अपने परिवारजनों की परवरिश से मिला है। इसी कारण जो हमें एक कहता है या दूसरा कहता है उसमें बहक कर तद्नुरूप अन्यों के प्रति अपनी धारणा बना लेते हैं। यही धारणा हमें जीवन के मकसद को प्राप्त करने से रोकती है। जबकि नियम है कि नकारात्मक धारणा के स्थान पर जिसके पास जितने भी गुण हैं, उन गुणों को धारण करने का प्रयास करे। इस हेतु चाहे कितनी ही तकलीफ क्यों न सहनी पड़े, उसे हँसकर सहन करो और सद्गुणों को धारणकर अपने गृहस्थ/कार्यालय की कार्यविधि तद्नुरूप दर्शाओ। इस तरह घर-परिवार व समाज में एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण करो। ऐसा बनने हेतु सजनों पहले सर्वविध् खुद निपुण बनो। याद रखो जिसको इसमें, उसमें, सबमें दोष नज़र आते हैं, वह ऐसा नहीं बन सकता। इसके विपरीत जो सब की अच्छाईयों को ग्रहण कर सकारात्मक वातावरण बनाने में निपुण हो जाता है, वह दोषग्रस्त स्थिति उत्पन्न होने पर भी सहर्ष उसका समाधान करने में सक्षम हो जाता है। यही नहीं उसे अपने समाधान पर विश्वास होता है। इस तरह उसके मन-चित्त में नफ़रत का वातावरण बनने के स्थान पर सजनता का वातावरण बना रहता है और इसी कारण उसके अन्दर

एकता, एक-अवस्था पनपती है व उखड़े दिल भी मिलकर एक हो जाते हैं। इस तरह उसे सर्वविध् लाभ ही लाभ प्राप्त होता है।

यहां विडम्बना की बात यह है कि आज के समय में सजनों हमें समझ ही नहीं है कि कौन गलत है व कौन सही? इसीलिए हम कमज़ोर हो गए हैं और कोई भी हमें आसानी से बहकाकर अपने कर्त्तव्य से डौला सकता है। ऐसे सजनों का फिर बोल ही बदल जाता है। यहाँ तक कि फिर उनकी नज़रों में बड़े-छोटे का सवाल ही खतम हो जाता है। इसीलिए फिर चारों तरफ उत्पात मचता है। सो सजनों आप अगर अपने गृहस्थाश्रमों में एकता का वातावरण मज़बूती से बनाए रखना चाहते हो तो आत्म-निरीक्षण द्वारा अपने विकारों का यानि जो स्वाभाविक कमज़ोरी/बीमारी अन्दर फैल रही है उसका जायजा लो और फिर उसे दूर करने हेतु जो युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने बताई है उसका सेवन करो और इस तरह विचारवान बन जाओ। जानो विचारवान बन गए तो फिर किसी से आपका टकराव नहीं होगा क्योंकि आपको पता लग जाएगा कि मैं हक़ीकत में शरीर नहीं अपितु अजर-अमर आत्मा हूँ और अब जो मैं हूँ वह ही सब हैं। यही एकात्मा का, आत्मीयता का सम्बन्ध हमारा वास्तविक सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध के स्थापित होते ही सजनों यकीन मानो कि जीवन के कर्त्तयों का हँसकर पालन करना सहज हो जाएगा। अब जो सजनों सहज है, उसे कठिन बनाने में क्यों तुले हुए हो? क्या ऐसा करके आनन्द प्राप्त होता है? बताओ।

‘मौन’।

जान लो सजनों कुछ और नहीं अपितु आपकी अपनी ‘मैं’ ही आपको मारती है यानि अन्यों पर अपना प्रभुत्व जमाने की आदत ही आपको अन्दर ही अन्दर खाती जाती है। अब जब ऐसा होता है तो अन्दर पीड़ा होती है और मैं चिल्ला उठता हूँ। ऐसा न हो इस हेतु सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार

बाहर से मुख घुमाकर अन्तर्मुखी बन जाओ। जानो जब तक आप अन्तर्मुखी नहीं होते तब तक अपने आप में परिपूर्ण नहीं हो सकते? सो यह मानकर चलो कि जितने आप कमज़ोर हो, उतने अन्य भी कमज़ोर हैं। फर्क केवल इतना है कि आप भिन्न प्रकार से कमज़ोर हो और अन्य भिन्न प्रकार से कमज़ोर हैं। ऐसे में टकराव तो होगा ही होगा। ऐसा न हो इसलिए सजनों कह रहे हैं अपनी कमज़ोरियों/विकारों को नोट कर सबके सम्मुख बखान करने की हिम्मत जुटाओ और निर्विकारी बन जाओ। जानो यही साहस आपको निर्विकारी बना सकता है। इसके विपरीत विकारी तो अपनी वाणी का गलत इस्तेमाल करते हुए नकारात्मक वातावरण का सृजन करता है। ऐसा वातावरण फिर अपने लिए, अपनों के लिए व सबके लिए हानिकारक सिद्ध होता है। इसी से जीवन का कार्य/उन्नति रुकती है और जीवन अनुशासनभंगता को प्राप्त होता है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों अपनी नकारात्मकता को निर्भयता से स्वीकारो और सबके सम्मुख रख दो। जानो ऐसा करने पर परमात्मा प्रसन्न हो जाएँगे और जान जाएँगे कि यह सत्य बोलने में निषंग है। आशय यह है कि आप ताकतवर अवस्था को प्राप्त हो सतवादी बन जाओगे। अब जो सतवादी होता है, वह एकता, एक-अवस्था का प्रतीक होता है। इसीलिए आप भी सजनों ऐसे ही बनो और इस हेतु अपनी अक्ल टिकाणे ले आओ। फिर कह रहे हैं कि स्वयं अच्छा बनने के लिए एक-दूसरे को भरमाओ नहीं अपितु बात की गहराई में उतरकर अच्छाई-बुराई को तोलो और तुल खड़ोवो। इसी सन्दर्भ में अब आगे कलुकाल की कहानी सुनोः-

श्री रामचन्द्र जी सजन कलुकाल की कहानी सुना रहे हैं

(श्री रघुनाथ जी के मुख के शब्द)

सुन लौ कलुकाल दी कहानी, सुतियां रैन विहाणी, सुन लौ कलुकाल दी कहानी।।

हनुमान जी वी सुणन, लक्ष्मण जी वी सुणन, सुने शक्ति सीता महारानी।

सुन लौ कलुकाल दी कहानी, सुतियां रैन विहाणी, सुन लौ कलुकाल दी कहानी।।

असली स्वरूप नू भुलिया, मन कई जूनां विच भटकावे

बुद्धि होई ए करूर तेरी कई वेरी जम्मे तो मरदा राहवे।

कर्मां दे अनुसार जीव, चौरासी भुगत भुगत के आवे।

भुलियां रैन विहाणी, भुलिया रैन विहाणी।।

द्वापर हटे कलुकाल आवे, चुरासी भुगत मनुष्य देही पावे।

सम्भले नहीं ते भुलिया राहवे, हीरे जैसा जन्म है बृथा न गंवावे।

ज़िन्दगी नहीं पहचानी, ज़िन्दगी नहीं पहचानी।

कई जूनां विच भटक भटक के, कई युग ऐवें गुज़ारी।।

द्वापर हटे कलुकाल आवे, आई तेरे जन्म दी वारी।

रस्ता छोड़ कुरस्ते पै गयों, मति गई तेरी मारी।

सुन लौ मेरी बाणी फेर जन्म न जानी, सुन लौ कलुकाल दी कहानी।।

भेजया हाई तैनू सच वणजन नू, झूठ दा कीता हेई व्यापार।

डरदा होया मेरे निकट न आवे, भुलिया फिरें गंवार।

ए जिन्दगी तेरी सदा नहीं रहनी, इस नू लवीं संवार।

जन्म दी मौज न माणी, जन्म दी मौज न माणी।।

मैं भेजया मृतलोक विच तैनूं, गर्भ विच तैं याद कितोई बाहर याद न कीता तैं मैनूं।।

हौं मैं दा तैनूं रोग लगा हाई, मोह माया दी फांसी।

गूढ़ी निन्द्रा विच तू सौं गयों, पंज चोर खड़े नी सिरांधी।।

जन्म दी मर्म न जानी, जन्म दी मर्म न जानी।।

जेहड़े वेले जागयों होयों हैरान, लुट गये चोर घर होया विरान।

राम नाम नू भुलिया होया, तृष्णा लगी ए सतान।

बुद्धि हीन हो गई है तेरी सर्पणी लगी है डंग चलान।

बाज़ी जित लवीं तां जानी, बाज़ी जित लवीं तां जानी।।

जन्म मरण दी पीड़ा नू भुलके, कई तरह तरह दे कष्ट उठाये।

मैं प्रीतम दी प्रीति नूं छोड़के, कठिन रोग तेरे तन नूं सतावे।।

बोलियां गोलियां तीर ते ताने होश तेरी भुलावे।

जन्म दी कदर ना जानी, जन्म दी कदर ना जानी।।

दोहाः-

भक्ति शक्ति नूं भुलिया, जन्म नाल जुल्म कमावे।

कई जन्मां दे चढ़ गये मोती बिन्द, दर दर ठोकरां खावे।।

मिट गया चानणा होया अन्धेरा, नज़र कुछ न आवे।

जिन्दगी नूं पहचाणी तां जाणी, जिन्दगी नूं पहचाणी तां जाणी।।

मैं भेजया बिन दागों इस नूं, चोले नूं दाग लगावे।

कूड़ कपट छल हृदय भरया, ऐसा पाप कमावे।

कूड़ कपट छल हृदय भरया, मैंनु लड़न दी जाच न आवे।।

ऐसा ठग ओ ठगियां करदा, किवें न ओ नरकां नूं जावे।

जेहड़ा तेरा दाग लहावे, उसनू पहचाणी तां जाणी।।

हीरे जैसा जन्म दित्ता, इसनूं जाके संवारे।

जन्म मरण दा अधिकारी होयों, अनगिनत रोग दिखावे।।

निन्दया उस्तत कूड़ चतुराईयां, घर घर धुम मचावे।

जेहड़ी उस नाल विहाणी, जेहड़ी उस नाल विहाणी।।

परमार्थ नूं भुलया होया, कष्ट उठाये हज़ार।

ख़ाक जमयो ख़ाक कुटम्ब कबीला, ख़ाक है पख परिवार।।

ख़ाक नाल प्रीत करें तूं, सब जग चलनहार।

महाबीर जी नूं पहचाणी तां जाणी, महाबीर जी नू पहचाणी तां जाणी।।

मन शैतान शैतानी करे, भोगे विषय विकार।

मौत आवाज़ां मारदी, लश्कर होया तैयार।।

महाबीर पूरण मिल पवन सिर तों उतरे भार।

हितकारी है जगत विच, उसनूं सुञाणी तां जाणी।।

सच्चे दरबार नूं भुलया, कठिन लगी है बिमारी।

दिने आराम राती निन्द्र न आवे, होश गई तेरी मारी।।

जा पुच्छे सजन प्यारिया, कोई बुझे मेरी नाड़ी।

ओ है जगत विच चानणा, उसनूं सुञाणी तां जाणी।।

उस दयालु दा तैं नाम न जपया, उमरा ईंवें गुज़ारी।

चलो चलिये उन्हां संगतां नू, जित्थे मिलन हनुमान सुखकारी।।

ओही हटावन विसूचिका ओही विसूचिका दा लश्कर भारी।

महाबीर पूरण मिल पवन तां पहचानी, बेड़ा होसिया पार ते मौजां माणी।।

राज अटल तूं जाणी, राज अटल तूं जाणी।।

ध्वनिः महाराज तूं है महाराज मैं हूं, महाराज है कुल जहान सारा।

महाराज महाराज किस नूं आखां, महाराज है इक नाम तेरा।।

सजनों यह कलुकाल की कहानी सम्पूर्ण मानव-जाति के भाव-स्वभावों का वर्णन कर रही है। जानो ऐसे ही भाव स्वभावों के कारण संसार का वातावरण दूषित बना हुआ है व इनका प्रभाव सब पर छाया हुआ है। अब इस प्रभाव में आप, हम, सब आ जाते हैं। इसलिए एक-एक को इस कहानी को पढ़ना है और समझना है कि इसके अन्तर्गत कहाँ और कैसे मेरे से सम्बन्धित विकारवृत्तियों का वर्णन किया गया है व उसका क्या परिणाम है? जानो यह पुरुषार्थ दिखाना जीवन की यथार्थता को समझने की बात है। वैसे भी सजनों विचार करो कि हमें यह मानव चोला इस समयकाल में क्यों मिला? जानो यह जीवन की रमज़ जानने की बात है। जब तक हमें जीवन की यह रमज़ समझ में नहीं आती, तब तक हम अज्ञानमय अवस्था से/कलुकाल की प्रवृत्ति से उबर सजन पुरुष नहीं बन सकते। इस सन्दर्भ में अगर सजनता का प्रतीक बन समभाव-समदृष्टि होना चाहते हो और अपने जीवन लक्ष्य को पाना चाहते हो तो एकान्त में बैठकर अपने और अपनों के स्वभावों से होने वाली दुर्गति को समझने में समय लगाओ और फिर उसका समाधान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से प्राप्तकर स्वार्थ से परमार्थ बन जाओ। ऐसा अद्भुत पराक्रम दिखाने पर यकीन मानो आप जीवन-विजयी हो जाओगे और

आनन्द से जीवन बिताओगे। इस तरह जीवन का यथार्थ, जीवन की महानता व मानव चोले का महत्त्व समझ आ जाएगा। जीवन का महत्त्व समझ आ गया तो मानो अन्तर्घट से अज्ञान छँट जाएगा और आप ज्ञानमयी अवस्था में आकर उच्च-बुद्धि, उच्च-ख़्याल हो जाओगे। इस तरह फिर आपको निष्पाप जीवन जीते हुए मोक्ष प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकेगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने आप पर कृपा करो और मोक्ष प्राप्ति की ओर आप बढ़ो और परिवारजनों व समाज को बढ़ाओ। यह आज के समय में कुदरत का आवाहन है। अतः कुदरत के आवाहन को अपना कर्त्तव्य समझो और इस कर्त्तव्य को पूरा कर अपने उपकारी व सबके सुखकारी बन जाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।